



“बदलते परिवेश में जल संसाधन प्रबंधन की भूमिका”



विषय पर

पांचवीं राष्ट्रीय जल संगोष्ठी

नवम्बर 19-20, 2015

राष्ट्रीय जलविज्ञान संस्थान, रुड़की दिनांक 19-20 नवम्बर, 2015 को “बदलते परिवेश में जल संसाधन प्रबंधन की भूमिका” विषय पर पांचवीं राष्ट्रीय जल संगोष्ठी का आयोजन करने जा रहा है। हिंदी में आयोजित की जाने वाली इस संगोष्ठी के विभिन्न सत्रों में प्रस्तुत करने हेतु विभिन्न विषय वस्तुओं पर शोध पत्र आमंत्रित किए जाते हैं।

अधिक जानकारी के लिए प्रतिभागी संस्थान की वेबसाइट (www.nih.ernet.in) का अवलोकन कर सकते हैं।

.....संगोष्ठी संयोजक.....

डॉ. रमा मेहता

रा.ज.सं., रुड़की,

☎ 01332-249228, 249257, 249267

ईमेल: jalsangosthi@gmail.com

पानी की गज़ल

रिस-रिस कर बहता पानी,
भूलल में रहता है पानी ।

निर्झर, नाले, खाले, सरिता,
सब में ही बहता है पानी ।

आंसू, वर्षा, ओस, पसीना,
रूप कई गहता है पानी ।

कूड़ा, कचरा, कीचड़ बदवू,
कितना-कुछ सहता है पानी ।

सहज-सरल बन रहना सीखो,
चात यही कहता है पानी ।

पानी जीवन जीव-जगत् का,
सार यही कहता है पानी ।

पानी है, तो जग-जीवन है,
इसीलिए बहता है पानी ।

पेड़ों की गज़ल

जीवन का सामान पेड़ हैं ।
विधना का वरदान पेड़ हैं ।

पात, फूल, फल, ईंधन देते,
धन-दौलत की खान पेड़ हैं ।

सब रौनक-हरियाली इनसे,
सचमुच जग की शान पेड़ हैं ।

इनसे बादल, इनसे वर्षा,
सर्जन का विज्ञान पेड़ हैं ।

देते हैं ममता की छाया,
लगते पिता समान पेड़ हैं ।

औरों के हित जीवन जीते,
सच्चे मेहरवान पेड़ हैं ।

पत्थर खाकर भी फल देते,
कितने धीरजवान पेड़ हैं ।

आओ, मिलकर इनको पूजें,
धरती के भगवान पेड़ हैं ।

संपर्क करें :

डॉ. रामनिवास ‘मानव’, डी. लिट्

“अनुकृति” 706, सैक्टर-13 हिसार-125005 (हरि.); फोन न. - 01662-238720